पीपीआर (बकरी प्लेग)

पीपीआर छोटे जुगाली करने वाले पशुओं बकरी और भेड़ को ग्रसित करने वाला अत्यधिक संक्रामक विषाणु जनित रोग है

रोग का संचरण

- दूषित भोजन, पानी, बिस्तर और अन्य उपकरणों से
- ग्रसित पशु के स्राव, उत्सर्जन और मल से
- संक्रमण साँस के माध्यम से और आंख से हो सकता हैं
- बाजार से नए खरीदे बीमार पशु से पूरे झुंड में
- पशुओं को पशु बाजार या मेले में ले जाना और विक्री के लिए पशुओं का परिवहन इस रोग के प्रसार का प्रमुख कारण है

लक्षण

- तापमान की उच्च वृद्धि (104-105° F)
- नाक से छींकने और खांसने के साथ स्राव का निकालना
- नाक और आंख पर एक परत का बनना
- मुख में, होठों पर, मसूड़ों पर, तालू और जीभ पर परिगलित घावों का बनना
- मुंह से दुर्गंध का आना
- निमोनिया, डायरिया तथा मल मे खून का आना
- गर्भवती बकरी का गर्भपात होना

दस्त

मुख की श्लेष्मा का गलन

बुखार

नासिका से स्राव

रोकथाम

- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखे
- प्रभावित पशुओं को चावल, मेंडुया और या दलिया जैसे तरल भोज खिलाए
- अल्सर पर ग्लिसरीन या वसा का लेप करे
- 1 लीटर पानी में 1g पोटेशियम परमैंगनेट डालकर मुंह में अल्सर को प्रति दिन 2 से 3 बार धोए
- पशुओं को चराई के लिए न छोडे
- कीटाणुनाशक जैसे फिनोल, सोडियम हाइड्रोक्साइड (2%) से बेड़ों की सफाई करे
- जिन क्षेत्रों में रोग प्रचलित है वहां से बीमार पशुओं को न खरीदें
- तत्काल परामर्श और एंटीबायोटिक उपचार के लिए नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करे

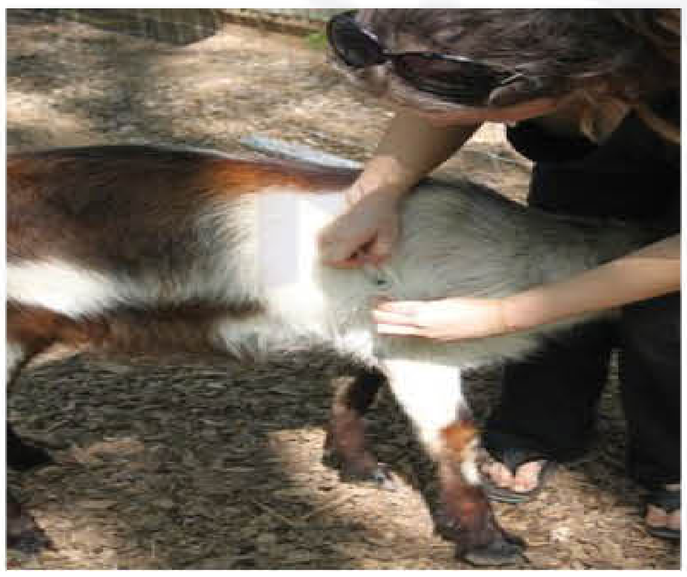

टीकाकरण

4 महीने की उम्र पर पीपीआर का टीका लगाए

यह तीन साल तक रोग प्रतिरक्षा प्रदान करता है।

अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करे

पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवा)

इसका 1% घोल (1g, 1 लीटर पानी में) विसंक्रामक का कार्य करता है। ग्रसित पशु के संपर्क में आए बर्तन और वस्तुओं को धोने के लिए एसका प्रयोग करे

फोटो स्रोत : इन्टरनेट

भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान

ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics

पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक

फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in